एजुकेशन डेली कॉलेज ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट का प्रोग्राम

सभी को एक तराजू में तौलना सही नहीं, सफलता के मायने सभी के लिए अलग अलग होते हैं

इंदौर. डेली कॉलेज ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट के इंडक्शन प्रोग्राम के तीसरे दिन विभिन्न विषयों पर सेशन आयोजित किए गए। आरंभ में प्रिंसिपल डॉ. सोनल सिसोदिया एवं एडमिनिस्ट्रेटर मयूर ध्वज सिंह ने सभी वक्ताओं का स्वागत किया।

ZOOM रिपोर्टर
patrika.com

सर्वप्रथम संगीतकार, अभिनेता एवं संचार विशेषज्ञ विक्रम बधवार ने अपने मेंटिमीटर से डीसीबीएम के प्रथम सेमिस्टर के स्टूडेंट्स की मेंटोरिंग की। बधवार ने छात्रों को समझाया कि जीवन में सफल होने के लिए यह आवश्यक है कि हम सभी को एक ही तराजू से ना तौलें। सफलता के मापदंड सभी के लिए प्रथक-प्रथक होते हैं। उन्होंने जीवन में सच्ची आजादी का सूत्र छात्रों के साथ साझा किया। उन्होंने फ्रीडम इज इक्वल टू ग्रेटिट्यूड प्लस फॉरगिवनेस का सूत्र सरल भाषा में समझाते हुए कहा कि अगर हम अपने जीवन में कृतज्ञता और क्षमाशीलता जैसे गुणों का विकास कर लें तो हम सरलता से सच्ची स्वतंत्रता अनुभव कर सकते हैं। संप्रेषणकला सफलता की एक अचूक कुंजी है। यदि हम हमारे दैनिक संवाद में दूसरों की भावनाओं के लिए संवेदनशीलता, सकारात्मक सोच और समानुभूति का समावेश कर लें तो जीवन में सफलता के द्वार स्वतः खुल जाते हैं।

आपकी और प्रोडक्ट की वैल्यू बढ़ाता है सोशल मीडिया : मयंक बत्रा

तीसरे सेशन में मयंक बत्रा ने स्टूडेंट्स को डिजिटल मार्केटिंग की बारीकियों अवगत करवाया। उन्होंने छात्रों को सोशल मीडिया का उपयोग कर अपने प्रोडक्ट एवं सर्विसेस की ब्रांड वैल्यू को कैसे बढ़ाया जा सकता है, इस विषय पर समझाते हुए बताया कि हम इंस्टाग्राम, फेसबुक, वाट्सऐप, गूगल आदि के उपयोग से हमारा नेटवर्क बहुत सरलता से बढ़ा सकते हैं। परिवर्तनशीलता के इस दौर में अच्छे नेटवर्क का होना बहुत आवश्यक है। आज हर कोई इन माध्यमों का उपयोग करके आगे बढ़ रहा है। उन्होंने लिंक्डइन के माध्यम से बताया कि हम कैसे स्वयं को और अपने बिजनेस को प्रमोट कर सकते हैं। स्टूडेंट्स के मन के प्रश्न हल किए। संचालन महक गर्ग एवं राज हरियानी ने किया।

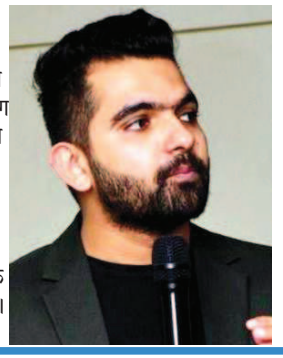

हर चीज को सही गलत की श्रेणी में मत बांटिए : सुरभि मनोचा चौधरी

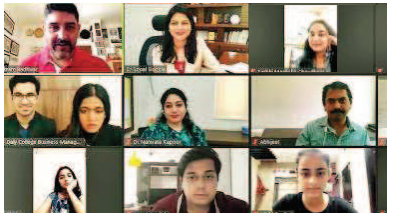

लेखिका एवं मोटिवेशनल स्पीकर सुरभि मनोचा चौधरी ने अपने सेशन में कहा, बाइनरी दृष्टिकोण वास्तविकता के प्रति मानव धारणा को संरचित करने में लाभकारी नहीं है। इसके विपरित स्पेक्ट्रम अप्रोच वास्तविकता के ज्यादा करीब होती है। इसलिए हर चीज को हम सिर्फ सही या गलत कि श्रेणी में नहीं बांट सकते हैं। यह कई जगह लागू होता है।